جمهورية مصر العربية	٦ جمادى الأولى ١٤٤٣هـ
وزارة الأوقاف	١٧ ديسمبر ٢٠٢١م

ⵜⴰⵎⴰⵡⴰⵙⵜ ⵏ ⵓⵙⴳⵎⵉ ⵏ ⵍⵎⵖⵔⵉⴱ	ⴰⵙⵉⵏⴰⵖ ⴰⵏⴰⵎⵓⵔ ⴳ ⵓⵙⴳⵎⵉ ⴰⵏⴰⵎⵓⵔ ⴰⵣⵓⵍⴰⵏ
ⵜⴰⵙⴷⴰⵡⵉⵜ ⵏ ⵜⵎⵓⵔⵜ	ⴰⵙⵉⵏⴰⵖ ⴰⵏⴰⵎⵓⵔ ⴳ ⵓⵙⴳⵎⵉ ⴰⵏⴰⵎⵓⵔ ⴰⵣⵓⵍⴰⵏ

خطبة الجمعة مترجمة الى اللغة الأنكو N'Ko (مانينكا، بامبارا، جولا، و ماندنكو)

ⵉⵏ ⵜⵎⵓⵊⵎⵏⵜ ⵏⵜⵎⵣⵉⵖ ⴼⵍⴰ ⴼⵍⴰ ⵏⵉⵏ:

"ⵜⵣⵉⵏⵜ ⵏⵏⴰ: ⴰ ⵜⵉ ⵎⵓⵏⵜⵉⵖⵏ ⴼⵍⵍⵉⵏⵏ"

ⴷⵜⵣⵎⵏ ⵍⵍⴰ ⴼⵍⴰ ⵜⵉⵏⵏⴰ ⴼⵍⴰ ⵜⵜⴰⵡ ⴼⵍⴰ:ⵏ ⵙⴰ ⵏⵉⵏ ⴰ ⴼⵍⴰ ⵜⵜⴰⵡⵏⵏⴰ ⵏⵏⵍⵍⴰⵏⴰ ⵏⵏⵍⵍⴰ ⵏⵉⵏ:

﴿كِتَٰبٌ فُصِّلَتۡ ءَايَٰتُهُۥ قُرۡءَانًا عَرَبِيًّا لِّقَوۡمٖ يَعۡلَمُونَ * بَشِيرٗا وَنَذِيرٗا فَأَعۡرَضَ أَكۡثَرُهُمۡ فَهُمۡ لَا يَسۡمَعُونَ﴾ [فصلت ٢-٤].

ⵜ ⵉⵣⵎⴰ ⵎⵓⵎⵓⵎⵓⵖⴰⵏ ⵏⵏ ⴷⵜⵜⴰⵡ ⴷⵣⵎⴰ ⵙⴰ ⵎⵏ ⵍⵍⴰ: ⴰ ⵏⵎⴰⴼⴰ ⵏⴰ ⵎⴰ:
ⴷⵜⵜⴰⵡⴰ ⵙⴰ ⴰⵏ، ⵜ ⵉⵣⵎⴰ ⵎⵓⵎⵓⵎⵓⵖⴰⵏ ⵏⵏ إ ⵎⵓⵍⵍⴰ ⴰ'إ ⵜⴰ ⵜⵜⴰⵣⵉⵏⵏⴰ ⴷⵜⴷⵍⵎⴰ
ⴰ'إ ⴰⵏ ⴽⴰ ⴰ'إ ⴰⵏ ⵏⵎⵓⵏ ⴰⵏ ⵎⴰ، ⵜⵜⴰⴽⴰ ⵜ ⴷⵜⵜⴰ ⵙⴰⴽⵏⴰ ⵜⴰ ⵜⴰ ⵏⵉⵏⴰ ⵙⴰ ⴰ
ⵏⴰⵜ ⴰ ⵏⵜⴰⵎⴰⵏ ⵙⴰ ⵏⴰⵜⴰⴼⴰ ⵙⴰ ⵏⴰⵜ ⴰ ⴷⴰⵜⴰⵏ ⵜⴰ ⴷⴰⵜⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ
ⵎⴰ ⵏⴰ ⵏⴰⵜ ⵎⴰⵜ ⵎⴰⵜⴰ ⵜⴰⵏⴰ ⵏⴰⵜⴰⵏⴰ ⵏⴰⵜⴰⵏⴰ ⵏⴰⵜⴰⵏⴰ ⵏⴰⵜⴰⵏⴰ ⵏⴰⵜⴰⵏⴰ

ⵜ ⴰⵏⴷⴰⵡ ⵏⴰ:/..

ⵏⴰ ⴼⴰ ⴷⴰ ⵎⴰ ⴽⵏⵎⴰ: ⴰ ⴼⴰ ⵏⵎⴰ ⵙⴰ ⵜⴰ ⴷⴰⵎⴰⵏⵏⴰ ⵙⴰ ⴷⴰⵎⴰⵜⴰⴽⴰ ⴷⵏⵏⴰ
ⵜⴰ ⵎⴰ: ⵜⴰⴰ ⵜⴰ ⵎⴰⵜ ⴼⴰ ⴷⴰⵜⴰⵏⴰ ⵜⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ
ⵏⴰⵏⴰⵏⴰⵏ ⵎⴰ: ⴰ ⴰ'إ ⴷⴰⵏⴰ ⴼⴰ ⴷⴰ ⵏⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏⴰ
ⵜⴰ ⵏⴰⵜⴰⵏ ⴰⵏ ⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ
ⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ
ⵏⴰⵏⴰ: ⴰ ⴰ'إ ⴼⴰ ⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ
ⵏⴰ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ
ⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ
ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏⴰⵏ ⴰⵏ

﴿ وَكَذَٰلِكَ أَنزَلۡنَٰهُ قُرۡءَانًا عَرَبِيّٗا وَصَرَّفۡنَا فِيهِ مِنَ ٱلۡوَعِيدِ لَعَلَّهُمۡ يَتَّقُونَ أَوۡ يُحۡدِثُ لَهُمۡ ذِكۡرٗا * إِ ١،آ ٱلَّذِي آتَيۡنَاهُمۡ هَٰذَا لِلنَّاسِ هَٰذَا مَثَلٗا لِّلنَّاسِ هَٰذَا لِلنَّاسِ هَٰذَا لِلنَّاسِ هَٰذَا لِ

كما يُنسَبُ إلى الخليلِ بنِ أحمدَ الفراهيديِّ (ت. ١٧٠هـ/٧٨٦م) أنَّهُ قالَ: «مَنْ لَزِمَ الصَّمْتَ نَدِمَ مَرَّةً، ومَنْ لَزِمَ البَيْتَ أَمِنَ عَثَرَةً». وهذا القولُ، وإنْ لم يَثْبُتْ إسنادُهُ إثباتًا قاطعًا، فإنَّ معناهُ يُوافِقُ ما في الأثرِ الصحيحِ عن النبيِّ ﷺ أنَّهُ قالَ: «مَنْ صَمَتَ نَجَا» (رواهُ الترمذيُّ وحَسَّنَهُ). فالصَّمْتُ هنا ليسَ عِيًّا ولا عَجْزًا عن القولِ، وإنَّما هو ضَبْطُ اللِّسانِ عن الخَوْضِ فيما لا يَعْنِي، وهو أَدَبٌ يَرْفَعُهُ العالِمُ والأُمِّيُّ على السَّواءِ، غيرَ أنَّ أَثَرَهُ في العالِمِ أَبْلَغُ لأنَّ العالِمَ يُؤْخَذُ عنه القولُ فَيُسْأَلُ عن كُلِّ كلمةٍ يَتَفَوَّهُ بها.

وَمِنْ أَدَبِ الصَّمْتِ أَنْ يَكُونَ عن تَفَكُّرٍ وتَدَبُّرٍ، لا عن غَفْلَةٍ وذُهُولٍ. وقد وَصَفَ الحارثُ المُحاسِبيُّ (ت. ٢٤٣هـ) في كتابِهِ «الرِّعايةِ لِحُقوقِ اللهِ» الصَّمْتَ بأنَّهُ مِيزانُ العَقْلِ، فكما أنَّ الميزانَ لا يَزِنُ إلا ما يُوضَعُ فيه، فكذلك العَقْلُ لا يُخْرِجُ إلا ما تَدَبَّرَ. وهذا يَقْتَضِي أن يَسْبِقَ القولَ تَصَوُّرٌ لِمَعْناهُ وتَقْدِيرٌ لِعاقِبَتِهِ، فإنْ كانَ خَيْرًا قُدِّمَ، وإنْ كانَ شَرًّا أُخِّرَ أو تُرِكَ.

وَمِنْ أَدَبِ الصَّمْتِ أَنْ يَكُونَ في المَجالِسِ أَكْثَرَ مِنْهُ في غَيْرِها، لأنَّ المَجْلِسَ يَجْمَعُ النُّفوسَ والأَهْواءَ، فَيَكْثُرُ فيه اللَّغَطُ والمُراءُ والغِيبَةُ. وقد نَهَى النبيُّ ﷺ عن المُراءِ وقالَ: «أَنَا زَعِيمٌ بِبَيْتٍ في رَبَضِ الجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ المِراءَ وإنْ كانَ مُحِقًّا» (رواهُ أبو داودَ بإسنادٍ حَسَنٍ). فالمُحِقُّ يُؤْجَرُ على حَقِّهِ، والمُبْطِلُ يَأْثَمُ بِباطِلِهِ، والسَّلامةُ في الصَّمْتِ عن هذا وذاك.

وَمِنْ أَدَبِ الصَّمْتِ أَنْ يُعْرَفَ مَتَى يُتَكَلَّمُ ومَتَى يُسْكَتُ، فَلِكُلِّ مَقامٍ مَقالٌ، وقد قالَ الشاعرُ:

لِسانُكَ أَهْلَكَ ما أَهَّلَكَ ... وما أَمْكَنَكَ فَقَدْ أَمْكَنَكَ

وَمِنْ أَدَبِ الصَّمْتِ أَنْ يَكُونَ عن تَفَكُّرٍ وتَدَبُّرٍ لا عن غَفْلَةٍ وذُهُولٍ. وقد وَصَفَ الحارثُ المُحاسِبيُّ (ت. ٢٤٣هـ) في كتابِهِ «الرِّعايةِ لِحُقوقِ اللهِ» الصَّمْتَ بأنَّهُ مِيزانُ العَقْلِ، فكما أنَّ الميزانَ لا يَزِنُ إلا ما يُوضَعُ فيه، فكذلك العَقْلُ لا يُخْرِجُ إلا ما تَدَبَّرَ. وهذا يَقْتَضِي أن يَسْبِقَ القولَ تَصَوُّرٌ لِمَعْناهُ وتَقْدِيرٌ لِعاقِبَتِهِ، فإنْ كانَ خَيْرًا قُدِّمَ، وإنْ كانَ شَرًّا أُخِّرَ أو تُرِكَ.

(١.ه.)ـ ڎ طڢ ۀ٬ا ۂڢ ۃا ۽ڎ: ڷڢں ۀه ڷڷڠسڢا ۃڢ ھه٬ـ ڠلڎ ا ۀ٬ڷڢں ۃا ڷلھڢ ۂا ھڎ ۃه ھڢ. ا ڷلھڢۂه ۵۹ ھڎ ۃں ۃا (١.ه.)ـ ۲٬ا طھڢ ڎ ۃں ۀه ۂحڠۃڢ ۵ڷڷڢا ڷلا٬ـ ڎ ۃں ڷا ۽ڎ ڷا ۲٬ڎ ۃں ۀڷڷڢ ڎ ھڢ ۽ححصڠ، ھڷھڢصا ڎ ۃں ۲٬ا ۂڢ ا ۀه ۽ڎ: (ڷڷں ۀه ۵ڷڷڢڢا ۃں ۀه ھڢ)ـ ۽ا "۽ڠا" ۽ڢۃا "۽ڠڢۂه" ڭ ھڢ ۽ڠ ۽ڷ۸ ھڢ ۽ڷڷڢ، ا ۽ا ھا ۲٬ا ۂڢ (١.ه.) ۽ڎ: ڠلڷڢ ڷں ھلھڠڢا ۂھطڢۂه ڭا ڭڷڢ ۹ ڷا ۽ا ڷلھڢ ڷں ۃا ۂحڠۃڢ ۂا ۽ا. ـڷڷ٬ھں ١٦٬٥٨٤٤ ٤٨٦-٥٦٤٬٥٦٦ ۂھڷا ۲٬ا ۂڢ (١.ه.) ۽ڎ: ڷں ۀ٬ڷں ۃا ۂا ۂڠۃا ۃلۃا ھه٬ـ ڠلڎ ھڠڎ ھڢ ھڠڎۂ ڭڠھڠڢۃا ڭڠھڠڢۃا ۂھلۃڢ ا ھ٬ا ۃا ۂحڎ ۂا ۲٬ا ۃا ۂھڢھڢۂ ھڢ ھڢ ۂھڢ ا ۂھ ھ٬ا ۂھڢۂا ۂھڢ ۂھڢ ھڢ ھڢ

قَالَ ٢ ٥/أ فِي يَدِ ﷺ فَاحْذَرْنِي فَإِنَّهَا لَا يَنْفَعُ هِيَ طَيِّ مَشْطَبِيِّ صَاحِ أَنَّ لَا
مَلْهَجَةِيَّهَجَةِيَّةِ مَاهَجَبِهِ مَشَهَ يَهِيَّ هُبِ فَ فَاحِيَّ تَا مَلَّةِيَّهِ
صَاحِبَةِ مَسْبَهِ لَا، إِ مَلَّهِ فَ صَمَّهِ مَّ هَنَا تَا طَيِّ تَ هُبِ هِيَ ﷺ
تَا صَحَفَةِ مَاهَبَهِ مَّ هَيَّهِجِ: تَيَّجِ كَاهَجَهِ هَجَهَكَ مَشَهَ
قَمَّيِّ يَاهَ أَ لَا هَا هُبِ هَجَهِ تَا، مَيَّهَيَّةِ دَ فَ يَ تَا مَّتَا يَا
تَاصَحَ ﷺ أَ لَا يَا هَّهِجِ يَ أَ تَا: يَهَ هُبِ ﷺ تَا صَاحِبَةِ
هَغَهَهِ هِيَ: إِ يَنِ يَ ﷺ تَا هَشَا هَ'يَهَ تَا: دَ ﷺ ﷺ يَنِ يَحَبِ هِيَ ﷺ
تَا هَشَا هَا ﷺ صَاحِبَةِ تَا، أَ صَهَيَّةِ هَنَا فَ تَاهَبِ لَا هَيَّصِ صَهَيَّةِ
فَ هِيَ.

قَالَ كَيَّجِ ﷺ مَيَّهِ: ٢ ﷺ تَا هَاصَّيَّةِ كَمَيَّا قَاهَيَّا يَا ﷺ كَشَا ﷺ
هَيَّ أَ لَا هِيقَ كَمَيَّا هَقَّهَا ﷺ قَاهَيَّجِ ﷺهَ.

*